ISSN: 2581-5903

শব্দবোধন

তৃতীয় বর্ষ, প্রথম সংখ্যা, মে ২০১৯

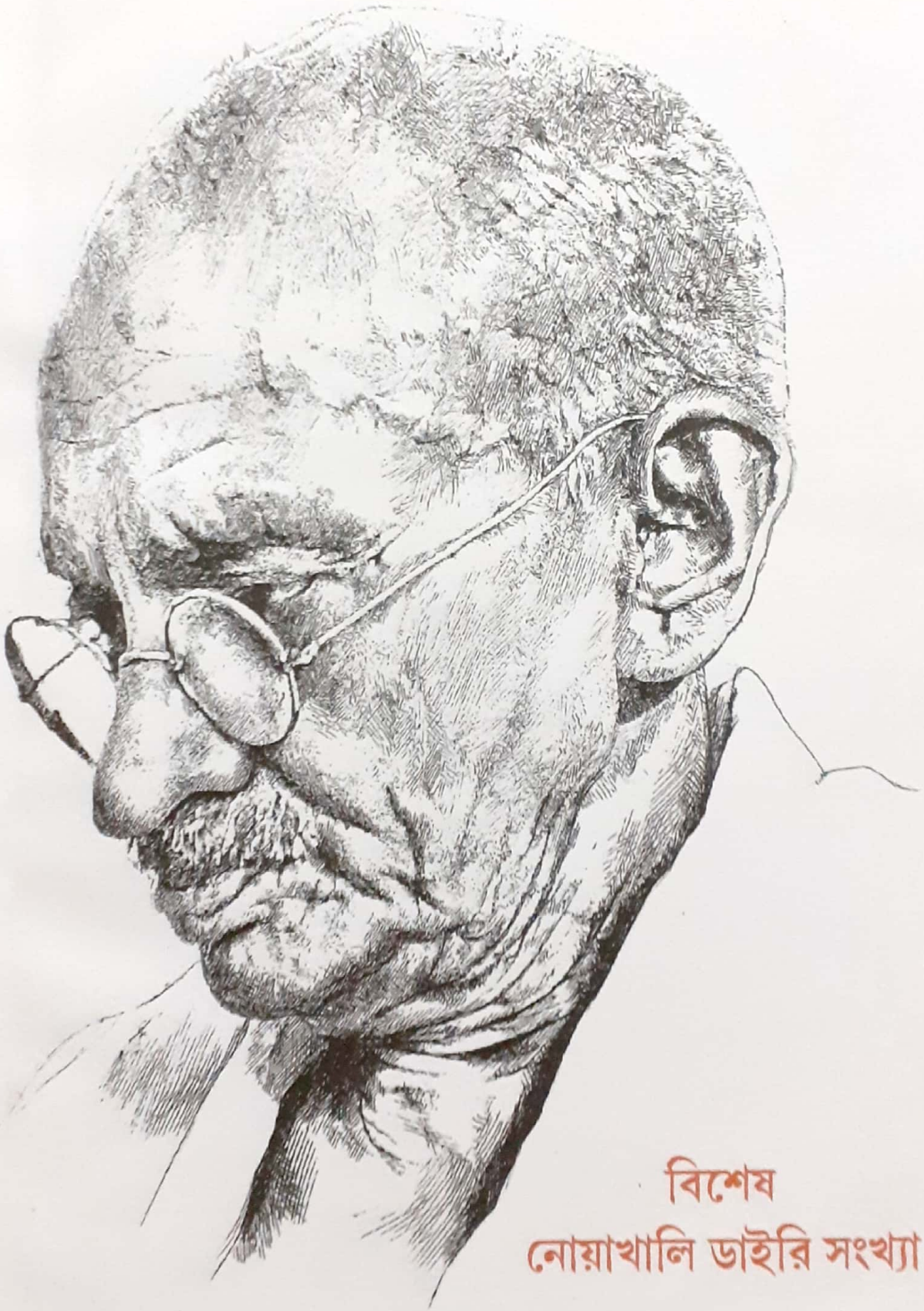

বিশেষ
নোয়াখালি ডাইরি সংখ্যা

Scanned by CamScanner

সূচি/Content

নোয়াখালি ডাইরি ৯
মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধী

বিবিধ প্রবন্ধ ১১৭
ভারতীয় নাটকে হরিশচন্দ্র মিথ
বিপ্লব চক্রবর্তী

নাটক নুরি: অস্থির সময়ের উদ্ভাসন ১২৩
আলাউদ্দিন মণ্ডল

বাংলার মকর সংস্কৃতি ১৩৪
দীপঙ্কর পাড়ুই

অন্তর্গত রক্তের ভিতর খেলা করে... ১৫০
সৌরেন বন্দ্যোপাধ্যায়

ইতিহাসের ক্লাস ১৫৩
অত্রি ভট্টাচার্য্য

Economics at the service of Neo-Liberalism ১৬০
Vibha Iyer

Polysystem Theory and Disability-centric texts:
Case Study of the Odia short story ১৭১
Lakshyaheera
Madhumita Chanda

न पूरब से अभिभूत न पश्चिम से आक्रांत: आचार्य रामचंद्र शुक्ल १८७
शीतांशु

प्रतिकूल हवाओं में जलती मशाल: राजेंद्र बाला घोष 'बंग महिला' २११
अंजूलता

पाणिनीयधातूनां नानार्थविचारविमर्श: २१७
तरुण-चौधुरी

Scanned by CamScanner

प्रतिकूल हवाओं में जलती मशाल: राजेंद्र बाला घोष 'बंग महिला'

अंजूलता
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

प्रारंभिक हिंदी कहानियों में बंग महिला का नाम एक महत्वपूर्ण कहानीकार के रूप में लिया जाता है। बंग महिला की कहानियों में मध्यवर्गीय संवेदना का स्पष्ट विकास दिखाई देता है। एक ऐसे समय में जब कहानीकार कल्पना तत्व के सहारे अपनी कला को विकसित करने का प्रयास कर रहे थे, बंग महिला की कहानियाँ मध्यवर्गीय संवेदना के यथार्थ से गहरा सरोकार रखते दिखाई देती हैं। इनकी कहानियों और लेखों से इस बात का स्पष्ट बोध होता है कि नवजागरण के युग में आम भारतीयों के लिए कौन से प्रश्न महत्वपूर्ण थे। पाठकों को यह भी पता चलता है कि आधुनिकता के विकास के युग से भारतीय समाज और स्त्रियों की प्रगति के लिए हम किन पहलुओं की तलाश कर सकते हैं। इस दौर में, जहाँ एक तरफ हम आधुनिकता का हवाला देकर जीवन के विविध आयामों को नए सिरे से खंगाल रहे थे वहीं दूसरी ओर हम भारतीय समाज की विसंगतियों को भली भांति समझ भी ना सके थे। भारतीय साहित्य और समाज में आधुनिकता के अलग-अलग मायने विकसित हो रहे थे। भारत के अलग-अलग भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में इसके विचारों का स्वरूप अलग-अलग ढंग का था। इसने तरह-तरह की दुविधाओं का विकास किया था। ऐसे परिवेश में ही बंग महिला सृजनरत थीं, जो जन्म से तो बंगाली थीं लेकिन उनका कर्म-क्षेत्र था हिन्दी प्रदेश और हिन्दी साहित्य।

बंग महिला की पहली कृति 'चंद्रदेव से मेरी बातें' आख्यायिका के रूप में सन् 1904 में प्रकाशित हुई। इस कृति में लेखिका चंद्रदेव को संबोधित करते हुए साम्राज्यवादी शक्तियों का स्पष्ट विरोध करते हुए लिखती हैं कि 'देवता भी अपनी जाति के कैसे पक्षपाती होते हैं। देखो न चंद्रदेव को अमृत देकर उन्होंने अमर कर दिया- तब यदि मनुष्य होकर हमारे अंग्रेज अपने जातिवालों का पक्षपात करें तो आश्चर्य ही क्या है? अच्छा यदि आपको अंग्रेज जाति की सेवा करना स्वीकार हो

Scanned by CamScanner